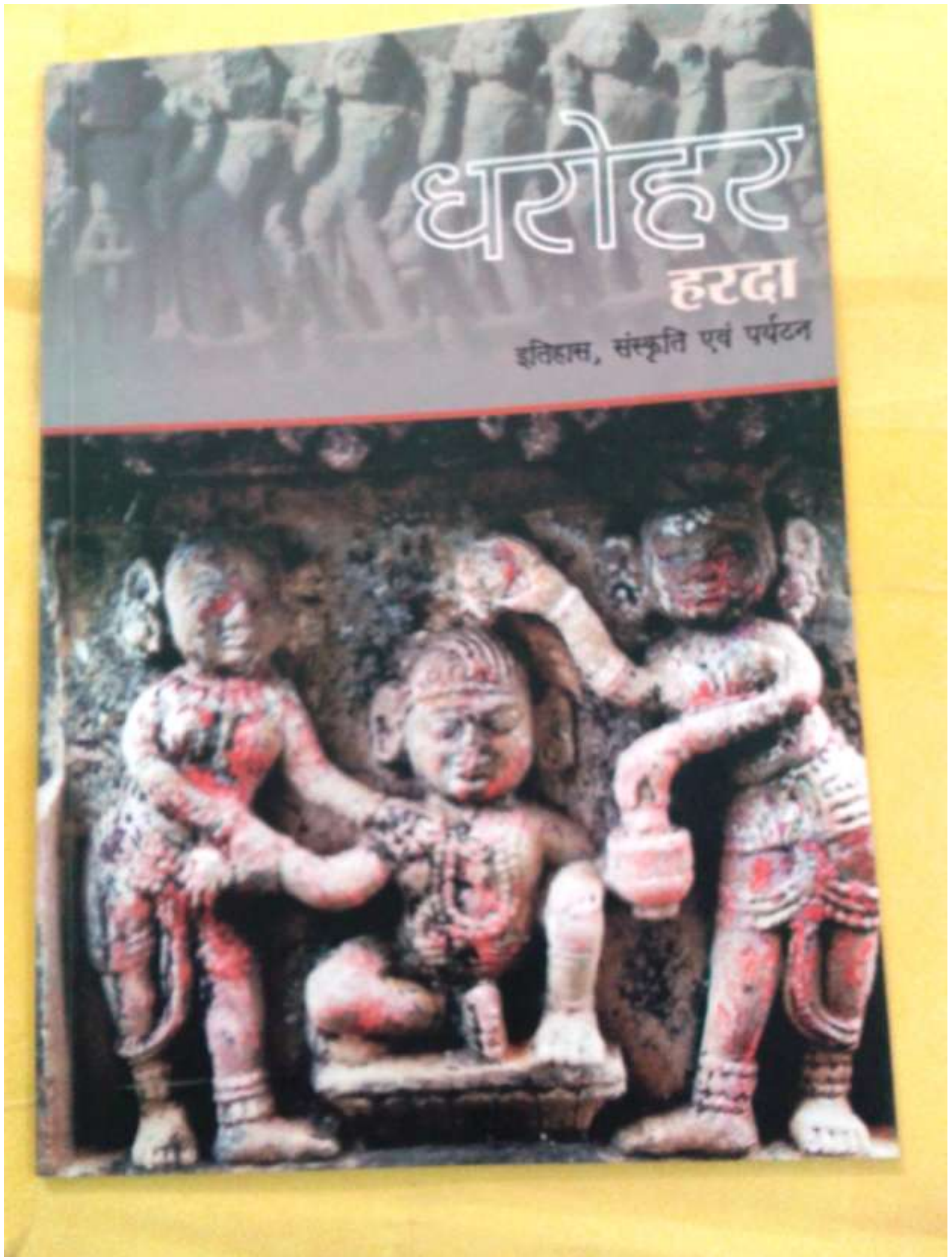
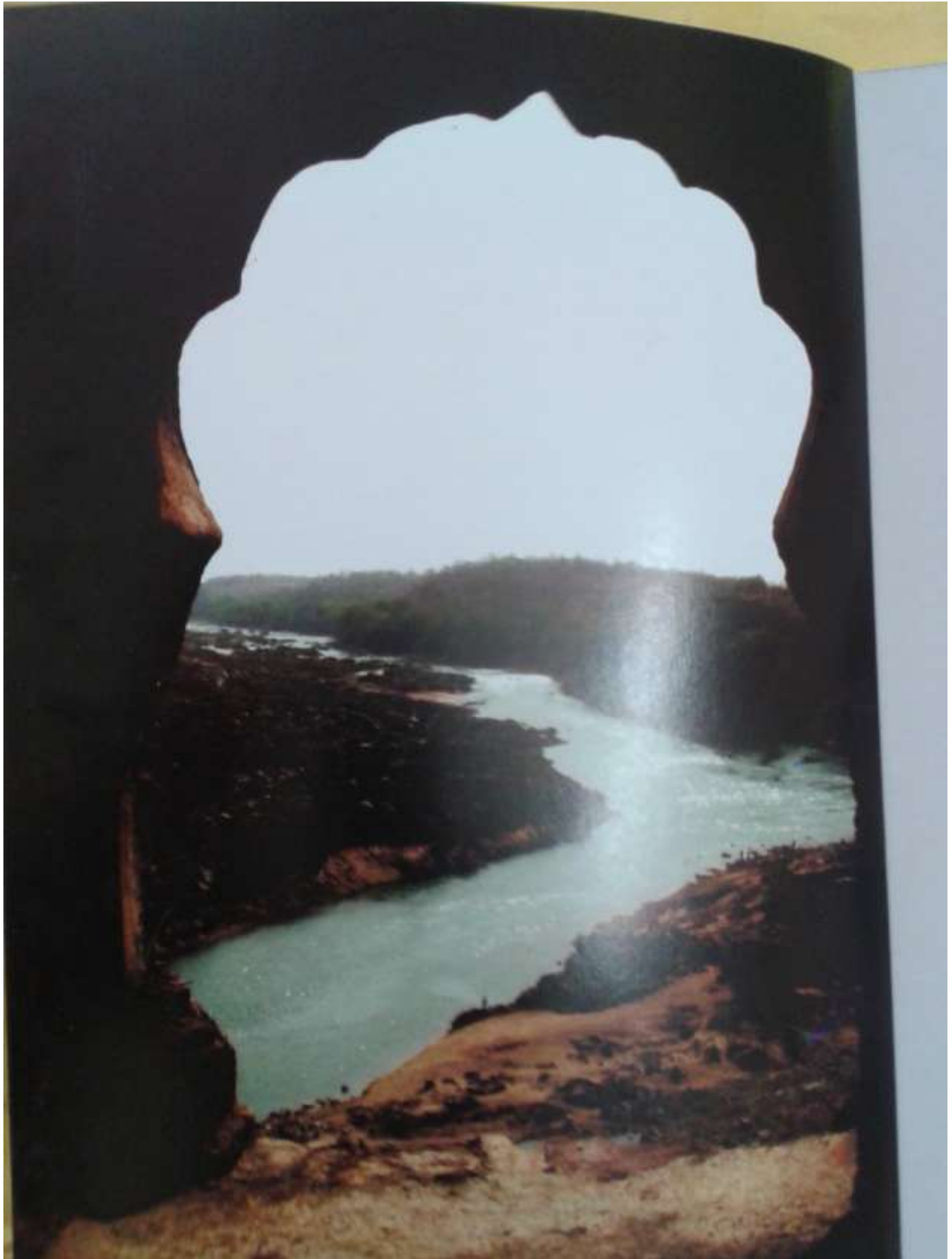
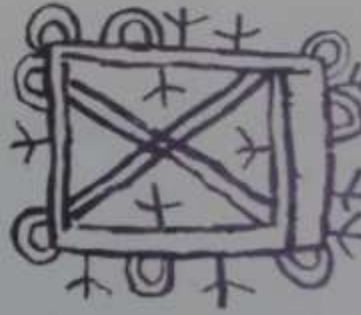

धरोहर
हरदा
इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन



धरोहर

हरदा जिला
इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन

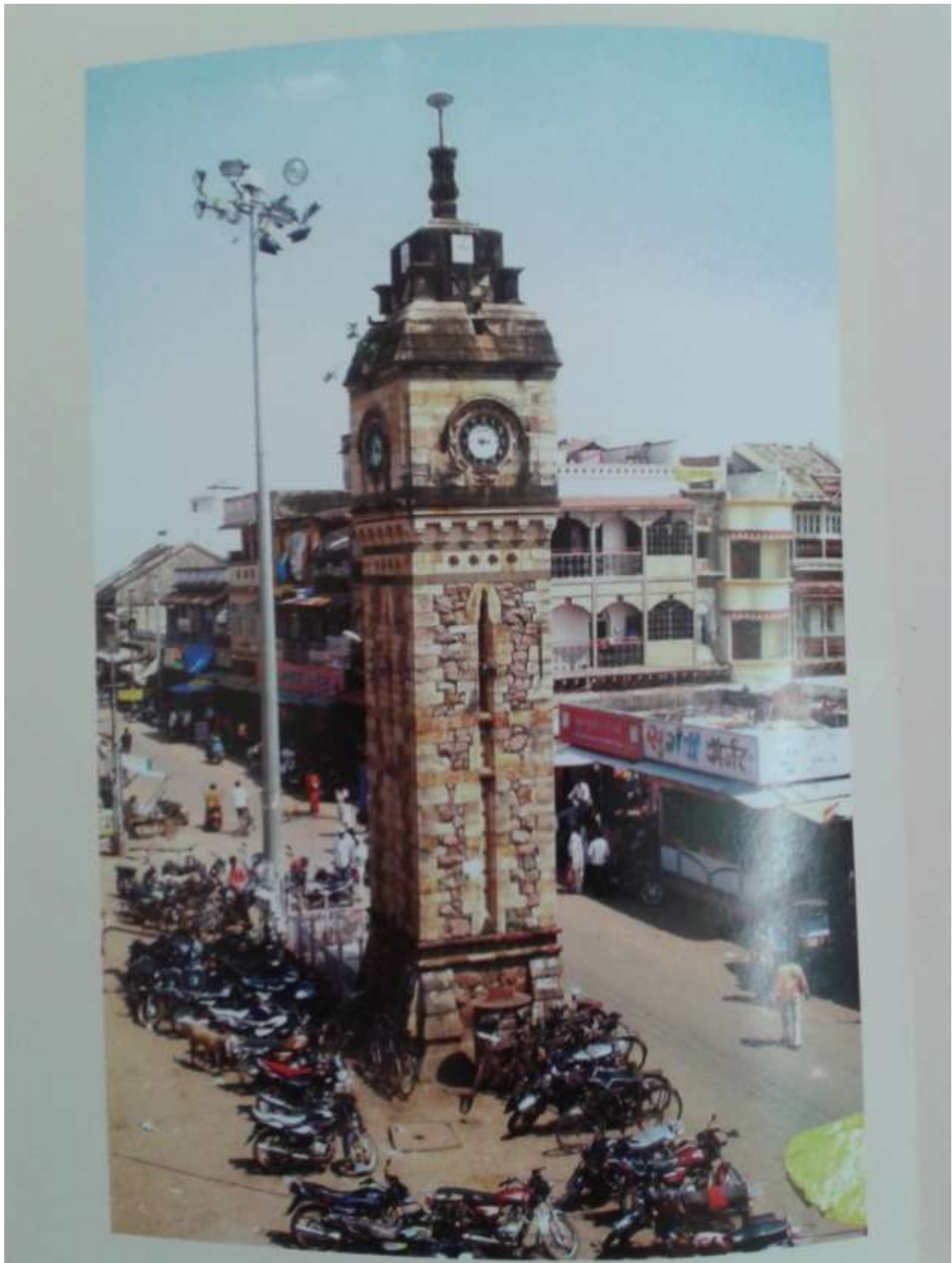
पहल एवं मार्गदर्शन
श्रीमती पुष्पलता सिंह
कलेक्टर जिला-हरदा



संपादक मण्डल
प्रो. प्रेमशंकर रघुवंशी
डॉ. धर्मेन्द्र पारे
डॉ. प्रभुशंकर शुक्ल
श्री ज्ञानेश चौबे
श्री श्याम साकल्ले

छायांकन-सहयोग
सुश्री सरला सोकल
डॉ. धर्मेन्द्र पारे
श्री अभय केकरे
श्री भास्कर गाचले
श्री राजेश पाटिल
श्री राजेन्द्र मालवीय

प्रकाशक
जिला पुरातत्व संघ, हरदा
जिला-हरदा (म.प्र.)



हरदा



मध्यप्रदेश के दक्षिण-पश्चिम भाग में, विंध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के मध्य प्रवाहमान नर्मदा अंचल में बसा हरदा जिला, मानव सभ्यता की प्राचीन क्रीड़ास्थली तथा अभिनव प्राकृतिक संपदा के लिए अपनी अलग पहचान रखता है। पूर्व में होशंगाबाद जिले का तहसील मुख्यालय रहा हरदा, 6 जुलाई 1998 को नवगठित जिले के रूप में अस्तित्व में आया। नर्मदापुरम संभाग का यह जिला समुद्र की सतह से 302 मीटर की औसत ऊंचाई पर स्थित होकर 21-53' व 22-36' अक्षांश तथा 76-47' व 77-20' देशांतर तक विस्तृत है। 998.41 वर्ग किमी. के क्षेत्रफल तथा लगभग 4.74 लाख की जनसंख्या (जनसंख्या 2001) वाले इस अनुसूचित जनजातीय बाहुल्य जिले की लगभग एक-तिहाई जनसंख्या गोंड एवं कोरकू जनजातियों की है। जिले में छः तहसीलें हरदा, टिमरनी, खिरकिया, रहटगांव, सिराली एवं हण्डिया हैं तथा चार प्रमुख नदियाँ-नर्मदा, अजनाल, गंजाल एवं माचक, जिले की जीवन-रेखा के रूप में प्रवाहमान हैं।

हरदा जिले के उत्तर में सीहोर, उत्तर-पूर्व में होशंगाबाद, दक्षिण-पूर्व में बैतूल, दक्षिण-पश्चिम में खण्डवा एवं उत्तर-पश्चिम में देवास जिलों की सीमाएँ अवस्थित हैं। हरदा जिला मुख्यालय, पश्चिम-मध्य रेलवे के दिल्ली-मुंबई रेलमार्ग पर स्थित है तथा देश एवं प्रदेश के विभिन्न प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 59-ए (इंदौर-नागपुर) हरदा से होकर गुजरता है। लोक व्यवहार एवं भाषा की दृष्टि से यह मालवा, निमाड़ एवं बुंदेलखण्ड की मिलीजुली संस्कृति का हिस्सा है। हरदा क्षेत्र में जो बोली प्रचलित है वह भुआणी बोली कही जाती है। नर्मदा घाटी के अभिन्न अंग के रूप में हरदा जिला अपनी पुरातात्विक, प्राकृतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन संबंधी धरोहरों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध एवं शोध संभावनाओं से भरा है।



शुक सारंग प्राचीन कलाकृति

ऐतिहासिक परिचय

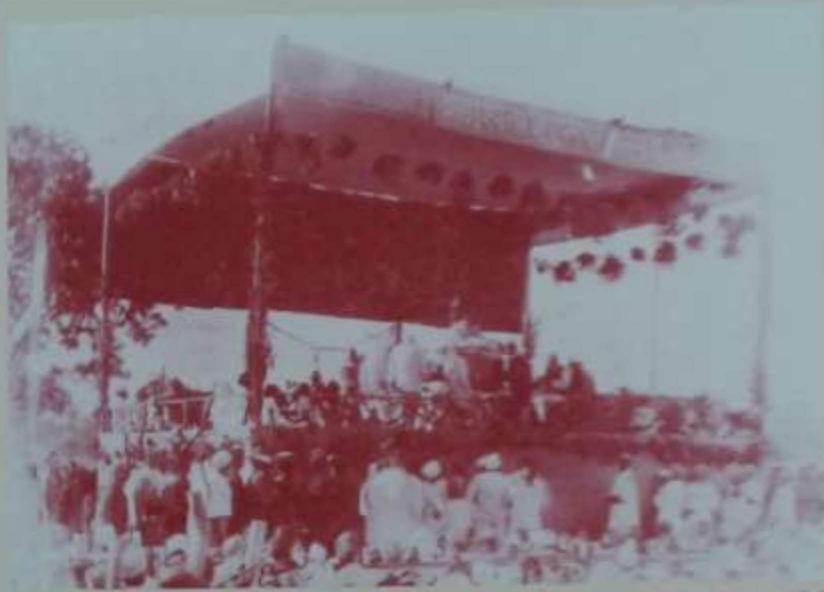


हरदा जिला पुरातत्वीय दृष्टिकोण से आदि सभ्यता से ही मानव अस्तित्व एवं उसके क्रियाकलापों का साक्षी रहा है। वर्ष 1960-61 में डीटेरा-पेटरसन द्वारा अमरकंटक से लेकर हंडिया तक अन्वेषण कार्य किया गया तथा उन्हें क्षेत्र से पाषाण-उपकरण एवं पशु-जीवाश्म प्राप्त हुए। हरदा जिले के ग्राम छिदगांव, हंडिया, रायबोर, धमासा, महालकलां एवं खेड़ीनीमा आदि स्थानों से प्राप्त पाषाण-उपकरण आदि मानव की क्रीड़ास्थली को इंगित करते हैं। नर्मदा की सहायक नदी गंजाल में किये गये समन्वेषण के दौरान छिदगांव तथा रायबोर में प्रारंभिक एवं मध्यपाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए थे। विगत वर्षों में ग्राम खेड़ीनीमा में किये गये उत्खनन कार्य के दौरान मध्ययुगीन मुद्राएँ, मनके, चूड़ियों के टुकड़े एवं पात्रावशेष भी प्राप्त हुए हैं। हरदा से कनिष्क एवं हुविष्क की स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं, जो इस भू-भाग पर कुषाण वंश के साम्राज्य का प्रतीक हैं।

मुगल काल में 1405 ई. एवं उसके पश्चात हुशंगशाह गोरी के शासन में हरदा नगर से 21 किमी. उत्तर में स्थित हण्डिया सरकार की गद्दी था। ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार हुशंगशाह गोरी ने हण्डिया और जोगा को खेड़ला तथा बहमनी राजाओं के विरुद्ध अभियान छेड़ने के लिए मुख्य केन्द्र बनाया तथा किलों का निर्माण करवाया था। शेरशाह ने शुजात खान को हण्डिया में नियुक्त कर नई प्रशासनिक व्यवस्था लागू की। मुगल प्रशासन व्यवस्था में होशंगाबाद जिले के भाग हण्डिया सरकार में सम्मिलित कर लिए गए। तत्समय हण्डिया सरकार में 23 महाल सम्मिलित थे जिनमें से तीन-हण्डिया, हरदा एवं बिछौला वर्तमान हरदा जिले में हैं। हण्डिया का महत्व दिल्ली से दक्षिण को जाने वाले राजमार्ग पर नर्मदा पर बने घाट के कारण था और संभवतः इसीलिए ये मुगल शासन में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सन् 1722 ई. में यह भू-भाग पेशवा-निजाम संधि के परिणामस्वरूप पेशवाओं के अधीन हुआ किंतु पेशवाओं को वास्तविक अधिपत्य सन् 1742 ई. के प्रारम्भ में ही प्राप्त हो सका था। अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के समय होशंगाबाद सात राजनीतिक संभागों में विभक्त किया गया, जिसके फलस्वरूप सांवलीगढ़ का

राजा हरदा के कुछ भाग को रहटगांव से नियंत्रित करने लगा, वहीं दूसरी ओर हरदा का उत्तरी भाग हण्डिया के मुगल फौजदार के नियंत्रण में तथा चारुवा एवं मकड़ाई रियासत काली भीत के राजा मकरंद शाह के नियंत्रण में चली गयी। 1800 ई. एवं उसके आसपास हरदा-हण्डिया क्षेत्र में पिण्डारियों के उपद्रव एवं अंग्रेज कर्नल द्वारा इनके दमन संबंधी उल्लेख इतिहास में मिलता है। सन् 1817 ई. में होशंगाबाद जिले के अंग्रेजों के साम्राज्य में विलय के पश्चात अस्थायी समझौते के अधीन हरदा एवं हण्डिया क्षेत्र सिंधिया शासकों के अधीन रहे। वर्ष 1860 तक हरदा-हण्डिया क्षेत्र अंतिम रूप से अंग्रेजों को सौंप दिया गया और जे. बेंदी को सहायक अधीक्षक के रूप में हरदा सब डिवीजन का प्रभारी बनाया गया। हरदा शहर में भूमिगत नालियों की व्यवस्था एवं घंटाघर निर्माण का कार्य लगभग इसी समय प्रारंभ होने का अनुमान है। वर्ष 1865 में चार्ल्स ईलियट द्वारा होशंगाबाद जिले को छः परगनों में विभाजित किया गया, जिसमें हरदा जिले से हरदा और चारुवा दो परगने सम्मिलित थे। ब्रिटिश शासन काल में 1867 ई. में हरदा नगर पालिका की स्थापना की गई।

हरदा जिला भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भी सक्रिय सहभागी रहा है। सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में हरदा में पुलिस विप्लव एवं तहसील कोषागार को लूटने जैसी घटनाएँ होने का उल्लेख मिलता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान असंतोष की अभिव्यक्ति एवं राजनैतिक जागृति के लिए 'सत्यप्रकाश' तथा अंग्रेजी-मराठी समाचार-पत्र 'न्यायसुधा' हरदा से प्रकाशित हुए। 1905 में बंग विभाजन के समय भी हरदा में ब्रिटिश शासन विरोधी गतिविधियां जारी रहीं। हरदा में वर्ष 1926 में पंडित मोतीलाल नेहरू एवं पं. मदन मोहन मालवीय जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने यात्रा कर आमसभाओं को संबोधित किया था। 8 दिसम्बर 1933 का दिन हरदा जिले के इतिहास में निश्चय ही ऐतिहासिक महत्व का है, क्योंकि इस दिन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी रेल मार्ग से हरदा पहुंचे थे। हरदा में बापू ने एक महती आम सभा को संबोधित किया, जिसका उल्लेख उन्होंने 'हरिजन' साप्ताहिक में भी किया था।

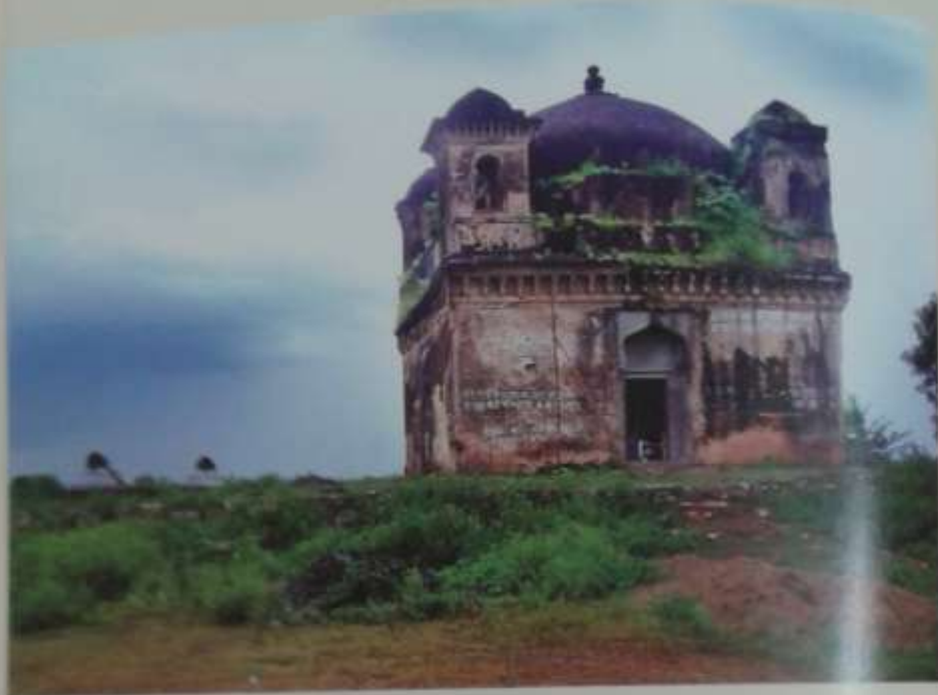


हरदा में आम सभा को सम्बोधित करते हुए गांधीजी

इस प्रकार आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक हरदा जिले का भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में अपना विशिष्ट स्थान है। पुण्य-सलिला नर्मदा के नाभिकुण्ड एवं जीवनदायी प्रवाह का साक्षी हरदा जिला अपनी उपजाऊ भूमि, विपुल वनसंपदा एवं सांस्कृतिक-सामाजिक-आर्थिक समृद्धि के लिए जाना जाता है।

हण्डिया

हरदा जिला मुख्यालय से लगभग 21 किलोमीटर उत्तर में एक अत्यन्त प्राचीन स्थान है-हण्डिया। मान्यता है कि हण्डिया नर्मदा नदी के मध्यबिंदु पर स्थित है और नर्मदा परिक्रमा करने वाले भक्तजन यहीं से अपनी तीर्थ यात्रा प्रारंभ करते हैं। जनश्रुति के अनुसार इसी स्थान पर पौराणिक ऋषि जमदग्नि तथा हैहय वंश के सहस्त्रार्जुन का मिलन हुआ था। दिल्ली एवं दक्षिण भारत के मार्ग में नर्मदा तट पर स्थित हण्डिया मुगलकाल में प्रशासनिक, धार्मिक, व्यापारिक एवं सामरिक सभी



अब्दुल्ला हसन का मकबरा

दृष्टियों से एक महत्वपूर्ण स्थान था। कहा जाता है कि बल्क के राजा नासिरउद्दीन हण्डिया आकर फकीर के रूप में बस गये थे, जो हण्डिया शाह भड़ंग के नाम से जाने जाते थे। माण्डू के सुल्तान हुशंगशाह गोरी ने यहाँ एक किले का निर्माण कराया था। आइने-अकबरी के अनुसार हण्डिया को मालवा सूबे की सरकार का दर्जा प्राप्त था। 18वीं शताब्दी में मराठा शासन के दौरान राजधानी हण्डिया से हरदा स्थानांतरित कर दी गई। यहाँ मुगलकाल में निर्मित वास्तुकला के भग्नावशेष बहुतायत में हैं। वर्तमान में क्षेत्र में स्थित पुरातात्विक धरोहरों एवं आसपास के स्थानों के संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य पुरातत्व विभाग एवं जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है।

रिद्धनाथ मं

रिद्धन

हण्डि
सौन्दर्य
अत्यंत प्र
सड़क म
में नर्मदा
स्वयं कु
आयता
चारों अ



रिद्धनाथ मंदिर



नर्मदा का नाभि-कुण्ड

रिद्धनाथ मंदिर

हण्डिया का रिद्धनाथ मंदिर और नेमावर का सिद्धनाथ मंदिर अपने कलात्मक सौन्दर्य तथा वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं। हण्डिया स्थित रिद्धनाथ महादेव मंदिर अत्यंत प्राचीन शिव मंदिर है तथा राज्य शासन द्वारा संरक्षित घोषित है। हरदा-इंदौर सड़क मार्ग पर हरदा जिला मुख्यालय से 21 किमी. की दूरी पर स्थित ग्राम हण्डिया में नर्मदा नदी के तट पर यह मंदिर अवस्थित है। मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण स्वयं कुबेर द्वारा कराया गया था। मंदिर के गर्भगृह तथा मंडप दो भाग हैं। मंदिर के आयताकार गर्भगृह में शिवलिंग तथा मंडप में नंदी प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के स्तंभ चारों ओर से शिव प्रतिमाओं एवं पुष्प-लतावल्लरियों से अलंकृत हैं। मंदिर की छत

सपाट एवं ढोलाकार है। मंदिर में 14 गुम्बदें बनी हुई हैं। इसका मंडप आठ स्तंभों पर अवलंबित है, जिनमें से दो स्तंभ चारों तरफ से अलंकृत हैं। भगवान सिद्धेश्वर और भगवान रिद्धेश्वर के मध्य नर्मदा नदी में नाभिकुण्ड बना हुआ है। वर्तमान में रिद्धेश्वर मंदिर परिसर का जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण कार्य प्रगति पर है।

गुरुद्वारा ग्राम-हण्डिया

हण्डिया नगर पुरातन काल से सर्वधर्म समभाव का परिचायक रहा है। रिद्धनाथ मंदिर एवं मुल्ला दो प्याजा की मजार जैसे विशिष्ट दर्शनीय स्थानों के साथ ही यहाँ स्थित है, सिक्ख धर्मावलंबियों की आस्था का प्रतीक- गुरुद्वारा। जनश्रुति के अनुसार सिक्खों के दसवें गुरु गुरुगोविंद सिंह जी अपने धार्मिक प्रवास के दौरान यहाँ से गुजरे थे।


गुरुद्वारा

मुल्ला दो प्याजा की मजार

अब्दुल हसन सम्राट अकबर के नौ रत्नों में से एक थे, जिन्होंने 'मुल्ला दो प्याजा' नामक प्रख्यात हास्यकृति की रचना की थी। मान्यता है कि अकबर के वज़ीर अब्दुल हसन, जो कालांतर में मुल्ला दो प्याजा के नाम से ही प्रसिद्ध हुए, का अवसान हण्डिया में हुआ था। ग्राम हण्डिया में स्थित यह स्मारक एक पाषाण निर्मित चबूतरे पर अवस्थित है। यह दरगाह लगभग 15वीं शताब्दी ई. में निर्मित है तथा सर्वधर्म समभाव के प्रतीक के रूप में आस्था का प्रमुख केन्द्र है।





हण्डियाशाह भड़ंग दरगाह

नर्मदा के किनारे स्थित हण्डिया से लगभग 2 किलोमीटर दक्षिण दिशा में हण्डिया शाह भड़ंग बाबा की इबादत का स्थान है। यहीं पर बाबा की दरगाह बनी हुई है। दरगाह स्थान पर एक आयताकार पत्थर शहंशाह नाजिरउद्दीन (हण्डिया शाह भड़ंग) की स्मृति में रखा है।

तेली की सराय

मुगलकालीन निर्माण कला के विशिष्ट प्रतीक के रूप में यह सराय अपने वास्तु-सौन्दर्य के लिए जानी जाती है। हण्डिया से लगभग तीन किमी. दूर टीले पर स्थित यह सराय राज्य शासन के संरक्षित स्मारकों की श्रेणी में सम्मिलित है। जनश्रुति के अनुसार 16-17वीं शताब्दी में निर्मित इस सराय का निर्माण एक तेली बैंकर द्वारा अपने ग्राहकों के ठहरने के लिए करवाया गया था। किंतु पुरातत्वविदों के मतानुसार इसका उपयोग संभवतः सैनिक छावनी के रूप में किया जाता रहा होगा, क्योंकि मुगल काल में हण्डिया सामरिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई था।



इस स्मारक में प्रवेश के लिए उत्तर और दक्षिण में दो विशाल द्वार हैं। प्रथम प्रवेश द्वार दोहरे मेहराबदार आकार में बना है। प्रवेश द्वार पर दोनों ओर एक-एक मीनार बनी हुई है तथा सराय के दाएं एवं बाएं पार्श्व की दीवारों पर दोनों ओर तीन-तीन बुर्ज बने हुए हैं। द्वितीय प्रवेश द्वार, प्रथम प्रवेश द्वार के समान ही है। स्मारक के चारों ओर छोटे-छोटे आयताकार 101 कक्ष बने हुए हैं, जिनमें कुछ अपूर्ण हैं। सराय के मध्य में एक बावड़ी भी निर्मित है। तेली की सराय, हण्डिया क्षेत्र के मुगलकालीन वैभव का भव्य स्मारक है।

जोगा का किला

हरदा जिले का जोगा ग्राम हरदा मुख्यालय से 46 कि.मी. उत्तर-पश्चिम में नर्मदा किनारे स्थित है। जोगा शासकीय आरक्षित वन का एक विशिष्ट वनभाग है। पूर्व में यह बेडी ठाकुरों (कोरकू) का मुख्यालय हुआ करता था। यहां का मुख्य आकर्षण है- नर्मदा नदी में दो जल धाराओं के बीच एक ऊंचे टीले पर निर्मित यह मुगलकालीन जोगा का किला। भव्य वास्तुकला एवं इतिहास को अपने भीतर संजोए यह प्राचीन किला पर्यटकों को रोमांचित कर देता है। जोगा से नावों के द्वारा पर्यटक किले के



टीले तक पहुंचते हैं। किले की चारदीवारी से बहती हुई नर्मदा का दृश्य अत्यंत मनमोहक दिखाई पड़ता है। कहा जाता है कि इसका निर्माण एक अन्य किले के स्थल पर औरंगजेब द्वारा किया गया था, जो होशंगाबाद एवं हण्डिया स्थित दो किलों के साथ-साथ हुशंगशाह गौरी द्वारा निर्मित किया गया था। नर्मदा के दूसरे तट पर पिण्डारी किले के अवशेष हैं। जोगा के दो भूतपूर्व गवर्नरों के मकबरे भी जोगा ग्राम में विद्यमान हैं। मुगलकाल में जोगा के किले का सामरिक महत्त्व था। किले के ऊपर से नर्मदा की जल धारा और संध्याकाल में सूर्यास्त का दृश्य बहुत आकर्षक दिखाई देता है।



गोंदागांव गंगेसरी

हरदा जिले की टिमरनी तहसील से 14 किमी. की दूरी पर गोंदागांव गंगेसरी के प्राचीन मठ, आध्यात्मिकता एवं वास्तु की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं रमणीय स्थान है। नर्मदा, गंजाल और गोमती नदी (स्थानीय) का त्रिवेणी संगम पर स्थित इस स्थान के मठ, गंगेसरी मठ के नाम से सुविख्यात है। मठ में भगवान दत्तात्रेय की प्रतिमा है। मठ के सामने ऋषितुल्य महन्तों की छतरियां बनी हुई हैं। नर्मदा तट का यह भू-भाग ईश्वर की उपासना एवं साधना का बड़ा केन्द्र था। यहां का प्रातःकालीन दृश्य संगम के जल में गुलाल-सी लालिमा घोलता है। पर्यटन से प्रेम रखने वाले लोग चांदनी रात में नौका-विहार का आनंद लेने के लिए यहां अवश्य आते हैं।



चारूवा

चारूव
व्यापारिक
बावड़ी में
पहले चान
चारूवा के
महादेव
पुरातत्वके
मंदिर के
मध्य में
द्वारपाल
गर्भगृह
आकृति
की संज्ञा



चारूवा का गुप्तेश्वर मंदिर एवं किला

चारूवा, दिल्ली से बुरहानपुर के बीच पुराने राजमार्ग पर स्थित होने के कारण व्यापारिक एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान था। इतिहासकारों के अनुसार चार बावड़ी में उपलब्ध मोढ़ी लिपि के एक शिलालेख से यह स्पष्ट होता है कि यह गांव पहले चानरवा के नाम से विख्यात था, जो कालांतर में चारूवा के नाम से जाना गया। चारूवा के निकट ग्राम हरिपुरा माल में 10-11वीं शताब्दी ई. में निर्मित गुप्तेश्वर महादेव मंदिर निमाड़ एवं मुआणा अंचल का बड़ी आस्था का केन्द्र है। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार यह मंदिर भूमिज शैली एवं सप्तरथ प्रकार का रहा होगा। मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर की ओर श्री गणेश, नीचे की ओर सप्तमातृकाएं एवं मध्य में नटराज की प्रतिमा उत्कीर्ण है। गर्भ गृह के प्रवेश-द्वार के दोनों ओर शैव द्वारपाल तथा परिचारिकाओं का अंकन है। मंदिर स्थित शिवलिंग भूतल के नीचे गर्भगृह में है। मंदिर के पीछे कालगणना की दृष्टि से वेदशाला की एक प्राचीन आकृति बनी हुई है। कतिपय विद्वान इसे द्वापरयुग से जोड़कर चक्रव्यूह की आकृति की संज्ञा देते हैं। प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर यहां एक वार्षिक मेला लगता है। आज यह

मंदिर एक विशाल और भव्य स्वरूप ले चुका है। शरद पूर्णिमा के दिन गर्भगृह की ऊंचाई पर बने रोशनदान से चन्द्रकिरणें सीधे शिवलिंग पर अपनी उज्जवल छटा बिखेरती हैं।

ग्राम चारूवा स्थित मैदानी किला पेशवा के अधीन श्री नारो बल्लाल भुस्कुटे द्वारा सन् 1750 ई. में निर्मित किया गया। किले में प्रवेश हेतु दो प्रवेश द्वार हैं, जिसके दोनों ओर रक्षक गृह बने हैं। किले की रक्षा भित्तियों में चारों कोनों पर चार विशाल बुर्ज बने हुए हैं जिन पर तोप और बंदूकें रखने के लिए चबूतरे निर्मित हैं। किले के भीतर मजार एवं बावड़ी निर्मित है।

मकड़ाई का किला

मकड़ाई भूतपूर्व जागीरी रियासत मकड़ाई का मुख्य ग्राम है। भिरंगी रेल्वे स्टेशन से 24 किमी. दूर तथा हरदा मुख्यालय से लगभग 37 कि.मी. दूर स्थित इस पुरानी रियासत के कुछ समृद्ध ग्राम नर्मदा की खुली घाटी तक बसे हुए हैं, किन्तु इसका मुख्य वनाच्छादित अधिकांश भाग सतपुड़ा की निचली ढलानों पर फैला हुआ है। मकड़ाई ग्राम में स्थित ऊंची पहाड़ी पर एक प्राचीन किला बना हुआ है। यहां का राजघराना राजगोंड परिवार का वंशज बताया जाता है। मकड़ाई के किले में राजभवन



की काष्ठकला अपने आप में विशिष्ट है। मकड़ाई में ही पहले-पहल डाक-तारघर और टेलीफोन घर की इकाईयां स्थापित हुई थीं। मकड़ाई किले में स्थित श्रीराम मंदिर, रनिवास, राजा की कचहरी दर्शनीय हैं। राम मंदिर के समीप रखी छोटी तोप राज परिवार की अप्रतिम विरासत है। पर्यटन की दृष्टि से मकड़ाई का क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन्य संपदा से भरपूर है।

सांगवा का किला

खण्डवा-हरदा सड़क मार्ग पर खिरकिया से 14 किमी. की दूरी पर माचक नदी के किनारे 16वीं शताब्दी में निर्मित सांगवा का किला एवं शिव मंदिर राज्य शासन द्वारा संरक्षित स्मारक हैं। यह किला दो रक्षा-भित्तियों के मध्य में है। किले के प्रवेश-द्वार के दाहिनी ओर भवन के अवशेष तथा बायीं ओर जोगेश्वर भगवान का मंदिर है। किले के आंगन में एक हवनकुण्ड भी स्थापित है। किला परिसर में उत्तराभिमुखी पाषाण निर्मित मंदिर अवस्थित है। मण्डप के मध्य में नंदी प्रतिमा स्थापित है। सांगवा के किले के अवशेष अपने प्राचीन गौरव की कहानी स्वयं बयान करते हैं।



बाबा हिंडोलनाथ की गुफा



हण्डिया के दक्षिण-पश्चिम में लगभग तीन किमी. दूरी पर मालपोन ग्राम के निकट पर्वतमाला की सुरम्य श्रेणियों में स्थित यह एक पवित्र स्थान है। मान्यता है कि प्रत्येक दिन गुफा में चट्टान पर त्रिशूल का नया चिन्ह दिखाई देता है। श्रद्धालुगण आस्था एवं विश्वास के साथ यहां आकर हिन्डोलनाथ का पूजन करते हैं।

बीवर की गुफायें

हरदा जिले में स्थित बीवर की गुफायें प्रकृति की धरोहर के रूप में विख्यात हैं। हरदा मुख्यालय से लगभग 14 किमी. दूर कांकरिया ग्राम से खमलाय, बड़नगर एवं झांझरी होते हुए बीवर की गुफाओं तक पहुंचा जा सकता है। गुफा में जाने के लिये चट्टानों के बीच दो द्वार हैं। गुफा के भीतर सूर्य की किरणें नहीं पहुंच पाती हैं, अतः बिजली के माध्यम से प्रकाश व्यवस्था की जाती है। गुफा में चार भाग दिखाई देते हैं। गुफा के पहले भाग में जैसे ही प्रवेश करते है, तो एक बड़े महाकक्ष जैसे आकार की रचना दिखाई देती है। आगे जाने पर गुफा का दूसरा भाग दिखाई देता है। तत्पश्चात भगवान शिव का स्थान है। यहां विभिन्न आकृतियों के शिवलिंग बने हुए हैं। गुफा के भीतर ठंडे पानी के झरने हैं। बीवर की गुफाओं के आसपास बेल पत्र के पेड़ लगे हुए हैं। प्राकृतिक सौंदर्य, कुदरत के रहस्य और जिज्ञासाओं से भरा हुआ यह स्थान पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

भादूगांव का गोमुख

हरदा से 38 किमी. तथा टिमरनी रेलवे स्टेशन से दक्षिण-पूर्व में 11 किमी. की दूरी पर स्थित इस ग्राम से होकर गंजाल नदी बहती है। यहां स्थित गोमुख झरने के विषय में मान्यता है कि इससे ताप्ती नदी निकलती है। यह भी कहा जाता है कि भादूगांव के तीर्थ यात्रियों के लाभार्थ गोमुख का निर्माण चमत्कार से हुआ था।

सती का मंदिर एवं महादेव मंदिर, ग्राम भुन्नास

हरदा से 12 किमी. की दूरी पर स्थित ग्राम भुन्नास के निकट यह स्मारक अवस्थित है जो कि 15-16वीं शताब्दी में निर्मित हुआ है। पुरातत्वविदों के अनुसार यह सती स्तंभ है जिसके निचले भाग में छः पंक्तियों का शिलालेख उत्कीर्ण है। वर्गाकार चबूतरे पर निर्मित इस स्तंभ में ऊपरी भाग पर स्त्री एवं पुरुष की आकृति उत्कीर्ण है।

ग्राम भुन्नास में ही तालाब के किनारे सत्रहवी शताब्दी में निर्मित महादेव मंदिर भी वास्तुकला का विशिष्ट नमूना है। ईंट निर्मित यह मंदिर पंचरथी प्रकार का है, जो ऊंचे जगत पर निर्मित है तथा जिसके स्तंभ लतावल्लरी से अलंकृत हैं। इसका शिखर पिरामिड के आकार का है तथा मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। भुन्नास में कई प्राचीन प्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं।

दर्शनीय स्थल

हरदा जिले की टिमरनी तहसील में ग्राम तजपुरा के निकट चिचोट कुटी नर्मदा के तट पर स्थित आध्यात्मिक साधना का स्थान है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य दर्शनीय है।

टिमरनी तहसील के घने वनों के बीच बोरी ग्राम में एक पिकनिक स्पॉट है। बोरी स्थित वन विश्रामगृह के समीप काजल-गंजाल नदियों का संगम है। भूतड़ी अमावस्या एवं शिवरात्रि पर्व पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण दूरस्थ अंचलों से यहां एकत्र होते हैं। इसी पहाड़ी पर आगे मुर्गी घाटी की पहाड़ी भी आदिवासियों का एक पवित्र स्थान है।

इनके अतिरिक्त, हण्डिया ग्राम में नर्मदा तट पर स्थित प्राचीन नर्मदा मंदिर, ग्राम सिराली का तिलभाण्डेश्वर शिव मंदिर, ग्राम उड़ा स्थित कालू बाबा की समाधि, सोडलपुर ग्राम स्थित कान्हा बाबा की छतरी एवं ग्राम उवां का देवी मंदिर हरदा जिले के अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।



आदिम और लोक समाज

इतिहास एवं सभ्यता सामाजिक परिवेश में ही पल्लवित होती है। हरदा जिले की सामाजिक विरासत भी पुरातात्विक विरासत की भांति ही समृद्ध है। जिले में एक-तिहाई जनसंख्या जनजातीय है, जिनमें कोरकू और गोंड जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है। इन जनजातियों की सांस्कृतिक समृद्धता सर्वविदित है। कोरकू जनजाति के आदिम नृत्य गदली, ठापटी, ढांढल आदि ने देशव्यापी कीर्ति अर्जित की है। इस जिले की गोंड और कोरकू जनजाति की यह विशेषता है कि उनकी आदिम बोली और सांस्कृतिक स्वरूप अभी संस्कृतिकरण के प्रभाव में नहीं आया है।

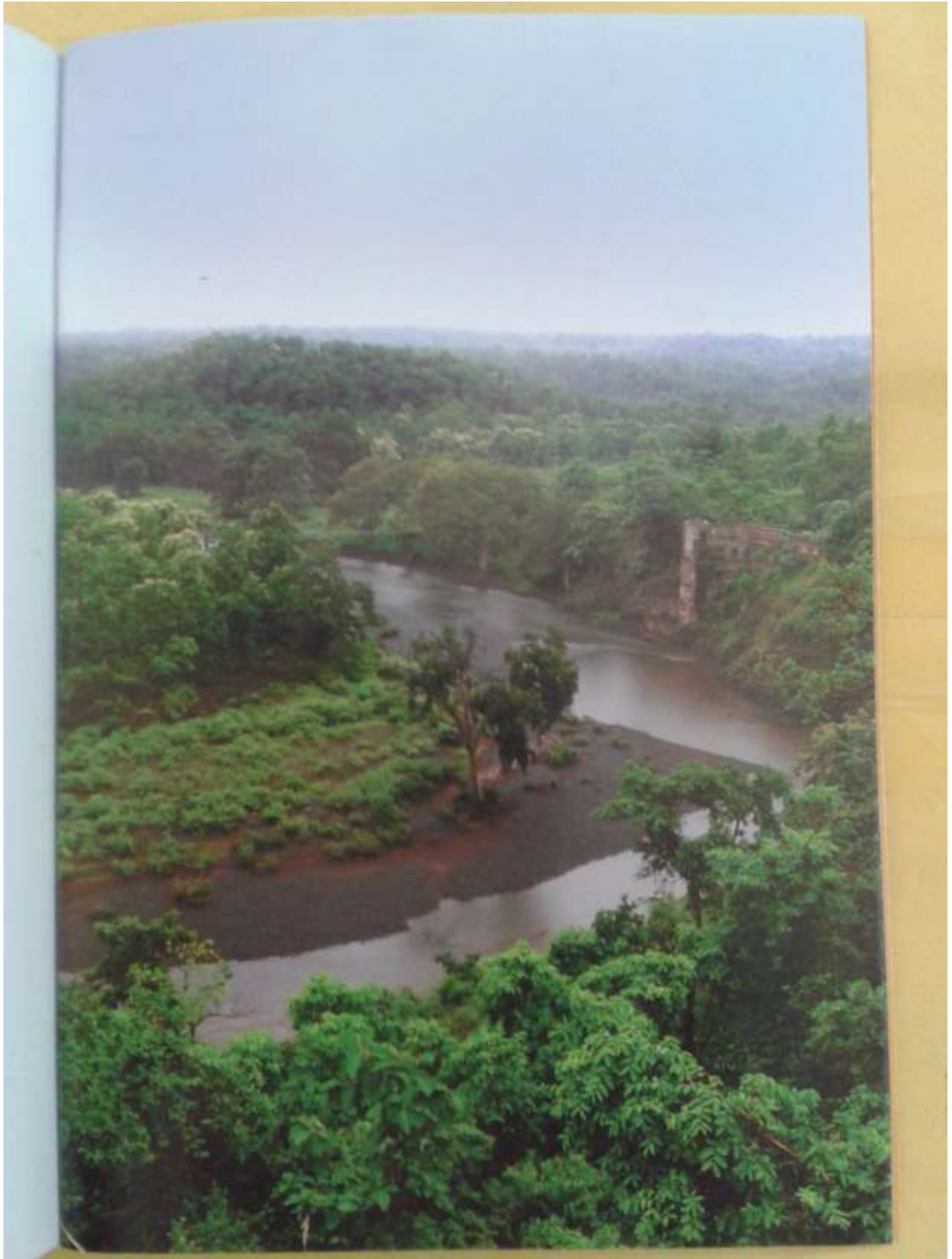


जनजातीय पहचान के अलावा यहां की लोक संस्कृति भी विशिष्ट है। लोक कला के कई रूपों ने देश-विदेश में ख्याति अर्जित कर जिले का मान बढ़ाया है। आनुष्ठानिक लोक नृत्य काठी के कलाकारों ने विदेशी मंचों पर भी अपनी पहचान कायम की है। लोक पर्व गणगौर, संझा, नरवत, गड़ब्या, आदि में यहां की लोक संपदा सुरक्षित है। यहां के नाथ, बैरागी, कालबेलिया, पारदी, ओझा, ठाठ्या, नहाल, हरबोला आदि विशिष्ट जातियों ने भी इस अंचल की लोकसंस्कृति को वैविध्य प्रदान किया है।



प्राकृतिक समृद्धि

यह तथ्य निर्विवाद है कि बिना वन-संपदा के धरती पर जीवन की कल्पना संभव नहीं है हरदा जिला, बकौल कविवर भवानी प्रसाद मिश्र, सतपुड़ा के घने जंगल से परिपूर्ण है। हरदा जिले में 1122.51 वर्ग किमी. के वन क्षेत्र में से 741.79 वर्ग किमी. आरक्षित वन, 11.71 वर्ग किमी. अवर्गीकृत वन, 36.90 वर्ग किमी. संरक्षित वन तथा 889 वर्ग किमी. क्षेत्र में उत्कृष्ट गुणवत्ता के सागौन के वन हैं। जिले में 42 वन ग्राम हैं तथा वन क्षेत्र में ब्लेक बक, चिकारा, लोमड़ी एवं नीलगाय जैसे वन्य जीव विचरण करते हैं। सर्दियों में नदियों के किनारों पर साइबेरियन क्रेन नामक प्रवासी पक्षी भी प्रतिवर्ष यहां अनुकूल मौसम का लाभ लेने के लिए आते हैं। हाल ही में हरदा-बैतूल के मध्य के वनों में शेर मय शावक भी देखे गये हैं जो कि जिले की पारिस्थितिकी के लिए एक शुभ संकेत है। वनांचल में निवासरत् कोरकू एवं गोंड जनजातियां हरदा जिले की प्रकृति-प्रदत्त संस्कृति को संरक्षित और सुरक्षित रखे हुए हैं। इस प्रकार हरदा जिला पुरातत्वीय धरोहरों के साथ-साथ प्राकृतिक संपदा के विषय में भी अत्यंत समृद्ध है।





और अंत में

प्रस्तुत आलेखन हरदा जिले की पुरातात्विक संपदा, इतिहास, कला, पर्यटन एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से इन धरोहरों के जनावलोकन की प्रारंभिक पहल है। सामूहिक प्रयासों से जिले के समृद्ध अतीत की, वर्तमान में पुनः प्रतिष्ठा करते हुए इसे भविष्य के लिये थाती के रूप में संजोकर रखने के दृढ़ संकल्प के साथ यह पुस्तिका जन-जन को समर्पित है।

HARDA
Madhya Pradesh



- District Boundary
- River
- State Highway
- Road
- Railway Track
- Trekking Routes
- District Headquarter
- Block Printing
- Town

Map not to scale

एवं
की
पुनः
कल्प

